लोग उड़ेंगे



लोग उड़ेंगे

लेखक: वर्जीनिया हैमिल्टन
अनुवाद : लाल्टू
चित्र : कैरन हेडाक

आधार प्रकाशन

ISBN : 81-85469-48-2
मूल्य : 15.00 रुपये

प्रथम संस्करण : 1997
प्रकाशक : आधार प्रकाशन
372 / सेक्टर-17, पंचकूला-134109
लेज़र टाईपसेटिंग: आधार ग्राफ़िक्स, पंचकूला
मुद्रक : एस.एन. प्रिन्टर्स, नवीन शाहदरा दिल्ली-**32**

LOG UDAINGAY by Verginia Hemilton



लोग उड़ेंगे



कहते हैं लोग उड़ सकते हैं। कहते हैं सदियों पहले अफ्रीका में कुछ लोग जादू में माहिर थे । वे हवा में इस तरह उड़ जाते थे जैसे किसी पेड़ पर चढ़ रहे हों । कभी उन्हें खेतों के उपर पक्षियों सा उड़ते देखा जाता। उनके काले पंख नीले आकाश पर फड़फड़ाते और उनकी चमक दूर तक फैलती ।

फिर एक दिन ऐसा आया कि कई लोग गुलाम बना लिए गए। उन्हें जहाजों पर लाद कर समुद्र पार ले जाया जाने लगा। वह एक लंबी कहानी है । उन्हें अपने पंखों को समुद्र पार जहाजों में ले जाना मना था । उड़ने वालों के पंख गिर गए ।

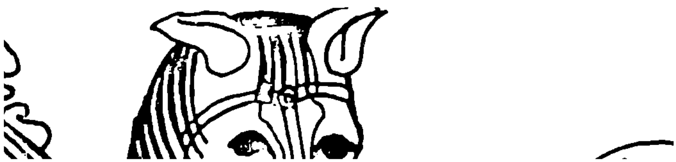
फिर बड़े बुरे दिन आए। समुद्री तुफान से लोग बीमार पड़ गए। जब धीर-धीरे अफ्रीका की सुगंध उनसे छूट गई, वे उड़ने कि बात भूल गए । पर कहते हैं कि उड़ने वाले लोगों के पास पुरानी क्षमता रह गई, यद्यपि उनके पंख गिर चुके थे । गुलामी की ज़िंदगी में भी वे अपनी गुप्त शक्ति नहीं खोए । देखने में वे अफ्रीका से आ रहे दूसरे काले लोगों से अलग नहीं थे। धीरे-धीरे उड़ने वालों और न उड़ने वालों में कोई फर्क न रहा ।





उड़ सकने वालों में एक बूढ़ा व्यक्ति था, मान लो उसका नाम था टोबी । एक लंबी, पर घबराई–सी औरत भी थी, जिसके पास कभी अपने पंख थे, मान लो उसका नाम था सेरा। सेरा की एक बच्ची भी थी, जिसे वह पीठ पर बांधे रखती। सेरा इस कठिन परिश्रम और नफ़रत भरी ज़िन्दगी से बहुत परेशान थी ।

सूरज उगने से अस्त होने तक गुलामों को खेतों में काम करना पड़ता था । गुलामों का मालिक खुद को उनका मास्टर कहता। वह तो मानो चट्टान था, या कोई बड़ा भद्दा पथरीला कोयला। बहुत बड़ा पत्थर सा न हिलने वाला । गुलामों के काम की निगरानी के लिए उसने एक ओवरसीयर तैनात किया था जो घोड़े पर बैठ कर निगरानी करता था । ड्रायवर नाम का एक व्यक्ति धीमें काम करने वाले लोगों को चाबुक से पीटता रहता था ताकि वे तेज़ी से काम करें। चाबुक की मार से दर्द



की एक लहर चमड़ा फाड़ कर अंदर चली जाती। लोग तेज़ी से काम करने लगते । और वे कर भी क्या सकते थे

सेरा खरपतवारों को कुदाल से अलग करती, फसलों की कतारें बनाती और उसकी बच्ची पीठ पर सोती ।

कभी अगर बच्ची को भूख लग जाती तो वह जोरों से चिल्लाती । सेरा काम छोड़ कर उसे दूध नहीं पीला पाती उसे प्यार करने या पुचकारने के लिए भी काम छोड़ने की इजाज़त नहीं थी । बच्ची रोती रहती। न चाहते हुए भी उसे यह सहना पड़ता। ऐसी पीड़ा सहने लायक दिल उसके पास न था।





एक बार ओवरसीयर चीख पड़ा, चुप कराओ इसे।

सेरा ने दया प्रार्थना की । फिर भी ड्रायवर ने आकर उस बच्ची पर जोर से चाबुक मारी । बच्ची घायल हो पागल सी चीखी और उसकी मां सेरा जमीन पर गिर पड़ी ।



फिर वह बूढ़ा टोबी आया और उसने हाथ पकड़कर उसे उठाया ।

''मुझे जाना ही पड़ेगा ।'' सेरा ने कहा।

''समय आ गया है ।'' टोबी बोला।

सेरा सीधी खड़ी नहीं हो पा रही थी। उसका सिर चकरा रहा था। धूप से चेहरा चमचमा रहा था। बच्ची रोए जा रही थी और मानों यह कह रही थी, 'दया करो, हाय, मुझ पर दया करो।' सेरा को बहुत तकलीफ हो रही थी और भूख भी लग रही थी । वह कतार पर बैठ गई ।

''ऐ...ऐ...उठ...वहां से।'' ओवरसीयर चिल्लाया। उसके हाथ के संकेत से ड्रायवर की चाबुक सेरा के पैरों पर जा पड़ी। उससे उठा न गया । टोबी के



अलावा सेरा और उसकी बच्ची का मदद करने वाला वहां कोई न था ।

"अब नहीं सहा जाता।" सेरा ने तड़पते हुए टोबी से कहा।

"हां बेटी, समय आ गया है," टोबी बोला,"जाओ, तुम तो जानती ही हो कैसे उड़ना है ।"

उसने अपने हाथ उठाए और सेरा ने उन्हें पकड़ा

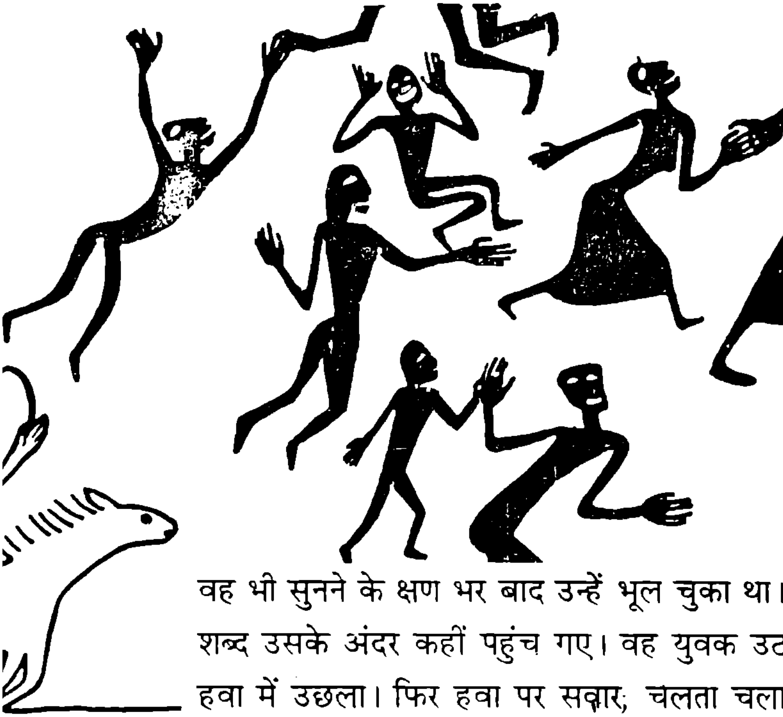
फिर जल्दी से उसने, 'कुम...याली, कुम बूबा तांबे' और कुछ अन्य शब्द बुदबुदाए । लगा जैसे वे कानाफूसी कर रहे हों या लंबी सांसें ले रहे हों ।

सेरा ने एक पैर हवा में उठाया । फिर दूसरा। पहले उसे उड़ने में कठिनाई हुई । उसने बच्ची को मज़बूती से बाहों में थाम रखा था । अफ्रीका के जादू ने उस पर असर करना शुरु कर दिया। स्वच्छंद एक चिड़िया-सी वह ऊपर को उठी। बिल्कुल एक पंख-सी हल्की । ओवरसीयर ने चीखते हुए उसका पीछा किया।

सेरा खेतों की बाड़ों के ऊपर से उड़ चली। लंबे पेड़ों से भी उसकी उड़ान न रुकी। ओवरसीयर उसे न रोक सका। वह एक चील सी उड़ती रही। और आखिर वह ओझल हो गई ।

किसी ने इस बारे में कोई बात नही की। किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था। पर आश्चर्य यह कि उन सबने उसे उड़ते देखा था।

अगले दिन काफी गरमी पड़ी । गरमी से गुलामों में से एक युवक थक कर गिर पड़ा। ड्रायवर आया और उसने चाबुक चलाई । टोबी ने आकर गिरे हुए उस युवक को कुछ शब्द कहे, जो अब किसी को स्पष्ट याद नहीं हैं।



वह भी सुनने के क्षण भर बाद उन्हें भूल चुका था। पर वे शब्द उसके अंदर कहीं पहुंच गए। वह युवक उठा और हवा में उछला। फिर हवा पर सवार; चलता चला। अंत में वह भी सेरा की तरह उड़ गया।

एक के बाद एक कई लोग गरमी से थककर गिरते रहे । टोबी सबकी मदद करता रहा। वह उन सबकी तरफ अपने हाथ बढ़ाता और कुछ शब्द बुदबुदाता 'कुंम कुंका याली, कुम बुबा तांबे।' कानाफूसी और फिर एक लंबी सांस! और फिर वे उड़ जाते। गरम हवाओं पर चढ़, काली चमकती लकड़ियों की काठियों से दीखते वे उड़ते गए नीचे और ओवरसीयर उनका पीछा करता रहा, चीखते हुए । उड़ने वाले कतारों को, और नदियों को पार करते उड़ गए ।

एक दिन ओवरसीयर चीख पड़ा, 'पकड़ो इस बूढ़े को –मैंने इसे अपने होंठों पर कुछ बुदबुदाते सुना है, पकड़ो इसे ।' फिर मास्टर नाम का वह व्यक्ति दौड़ता हुआ आया। ड्रायवर ने टोबी को बांधकर मारने के लिए चाबुक संभाली। गुलामों के मालिक ने अपनी छोटी बंदूक निकाली । वह उस बूढ़े अफ्रीकी टोबी को खत्म करना चहता था ।

टोबी हंसता रहा । कहते हैं उसने जोर से अपना सिर हिलाते हुए कहा,'ही, ही। तुम्हें अब पता चलेगा मैं कौन हूं। इस खेत में काम करने वालों में से कईयों को तुम आज पहचान पाओगे। उनके ताकते चेहरों से उसने कहा,' हम उड़ने वाले हैं।'

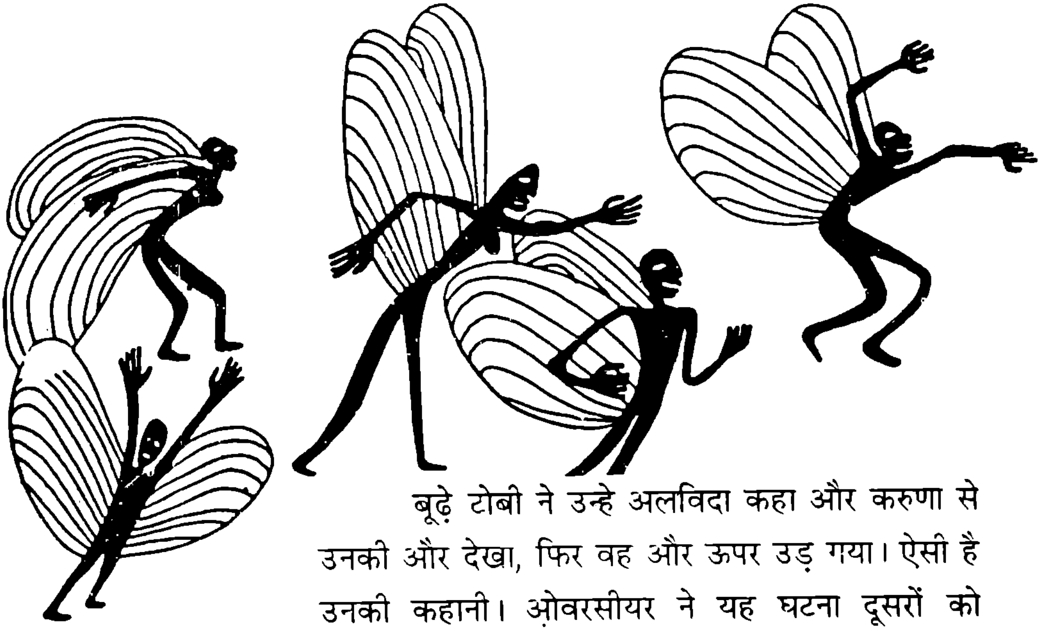


फिर उन प्राचीन शक्तिशाली शब्दों को उसने दोहराया। उस खेत में चारों और जितने भी लोग चाबुक से सहमे खड़े थे, सबको सुनाते हुए उसने कहा ,'.....बुबा याली ....बुबा ताबें !'

फिर तो बस हल्ला ही मच गया । झुकी रीढ़ें सीधी हो गईं। गुलाम कहलाने वाले बूढ़ों और जवानों में वे सभी जो सभी उड़ सकते थे, उन्होंने हाथ पकड़े । लगा जैसे वे घूम-घूम कर गाएंगे । पर वे न तो घेरे में घूम रहे थे, न उन्होंने कोई गाना गाया। वे हवा में उड़ गये एक झुंड़ बन वे उड़ते रहे। नीले आकाश में वह झुंड़ काला आकार सा बनता चला गया। जैसे काले कौए या काली छायाएं एक साथ उड़ रही हों। इतनी उंचाई तक उड़ गए गये कि उनका आकार भी ना रहा। उस खेत के कहीं ऊपर, उस गुलामी से कहीं उपर ,स्वतंत्रता की दुनिया में उड़ गए वे।

बूढ़ा टोबी भी उनके पीछे उड़ा । वह उनकी निगरानी करता रहा । अब उनकी आखों में न तो आसूं थे-न होंठों पर हंसी, वह भविष्य दृष्टा था । उसकी आखें न उड़ सकने वाले उन गुलामों पर पड़ी जो अभी भी खेत पर खड़े थे ।

' हमें साथ ले चलो ' उनकी आखें कह रही थीं । पर वे ड़र से कह नहीं पा रहे थे । टोबी ने उन्हे पीछे छोड़ दिया । उन्हे उड़ना सिखाने का वक्त ही नहीं मिला उसे । उनके लिए अब बस , कभी भग जाने का अवसर ही रह गया था ।



बूढ़े टोबी ने उन्हे अलविदा कहा और करुणा से उनकी ओर देखा, फिर वह और ऊपर उड़ गया। ऐसी है उनकी कहानी। ओ़वरसीयर ने यह घटना दूसरों को सुनाई। मास्टर नाम के व्यक्ति ने कहा,'यह सब झूठ है, प्रकाश का कोई चमत्कार था।' ड्रायवर ने किसी से कुछ ना कहा।

उड़ न पाने वाले गुलामों ने उड़ने गए लोगों के बारे में अपने बच्चों को बताया । एक दिन वे भी आज़ाद हो गए-तब ये कहानियाँ उन्होंने कहीं ।

स्वाधीन देश में आग के पास बैंठे निर्भय होकर उन्होंने ये सब बातें बतलाई । उन्हें बिना किसी डर के आग के सामने बैठना, स्वाधीनता और कहानियाँ सुनाना खूब भाता था।

कहते हैं इन बच्चों ने बड़े होकर अपने बच्चों को यह कहानी सुनाई । अब में भी तुम्हें सुना रहा हूँ ।